अध्याय- चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय –चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण

अध्याय –चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावनाः–

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के इस अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गयी हैं, तथा सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया है।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषणः–

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या परिकल्पना के अनुसार निम्नलिखित है–

परिकल्पना क्रमांक–1

कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नही हैं।

सारणी क्रमांक–4.2.1

नियंत्रित व प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों के अंतिम परीक्षण के प्राप्तांको का माध्य, प्रमाणविचलन, क्रान्तिक अनुपात, दर्शन सारणी

समूह	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	क्रांतिक अनुपात
नियंत्रित समूह	40	22.66	2.57	9.11
प्रायोगिक समूह	40	17.83	2.17	

❖ 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

निरीक्षण :–

अंतिम परीक्षण के अंक मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि नियंत्रित समूह का मध्यमान 22.66 है, तथा प्रायोगिक समूह का मध्यमान 17.83 है। उसका क्रांतिक अनुपात 9.11 है, तथा यह 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः नियंत्रित समूह के कक्षा अध्यापन की पद्धति से प्रायोगिक समूह की संगणक सहायक शिक्षण से विद्यार्थियों की निष्पत्ति अच्छी दिखाई दी इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

स्पष्टीकरणः–

परम्परागत अध्यापन पद्धति विद्यार्थियों को अरूचिपूर्ण लगती है। उसमें उनकी सहभागिता नहीं होती। संगणक सहायक शिक्षण से विद्यार्थी खुद कार्य करता है। स्वअध्ययन करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप उसमें विद्यार्थी की जिज्ञासा बनी रहती है। विद्यार्थी अधिक रूचि से पढ़ाई करता है। इसलिए उसके प्राप्तांक पर परिणाम दिखाई देता है।

निष्कर्ष :–

कम्प्यूटर सहायक शिक्षण से विद्यार्थियों की निष्पत्ति में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना क्रमांक–2

कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा–8वीं की छात्राओं की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक–4.2.2

नियंत्रित व प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों (छात्राओं) का अंतिम परीक्षण के प्राप्तांको का माध्य, प्रमाण विचलन, क्रान्तिक अनुपात, दर्शन सारणी

	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	क्रांतिक अनुपात
नियंत्रित समूह	20	17.3	2.86	3.73
प्रायोगिक समूह	20	20.1	1.73	

❖ 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

निरीक्षण :–

अंतिम परीक्षण के अंक मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि नियंत्रित समूह का मध्यमान 17.3 है, तथा प्रायोगिक समूह का मध्यमान 20.1 है। उसका 'टी' मूल्य 3.73 है, तथा यह 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः नियंत्रित समूह के कक्षा अध्यापन की पद्धति से प्रायोगिक समूह की संगणक सहायक शिक्षण से विद्यार्थियों (छात्राओं) की निष्पत्ति अच्छी दिखाई दी इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

स्पष्टीकरणः–

परम्परागत अध्यापन पद्धति विद्यार्थियों को अरूचिपूर्ण लगती है। उसमें विद्यार्थी कम सहभागी होते है। संगणक सहायक शिक्षण से विद्यार्थी खुद कार्य करता है। उसे स्वअध्ययन करना पड़ता है।

परिणाम स्वरूप उसमें विद्यार्थियों की जिज्ञासा बनी रहती है। विद्यार्थी अधिक रूचि से पढ़ाई करता है। इसलिए उसके प्राप्तांक पर परिणाम दिखाई देता है।

निष्कर्ष :–

कम्प्यूटर सहायक शिक्षण से विद्यार्थियों (छात्राओं) की निष्पत्ति में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना क्रमांक–3

कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा–8वीं के विद्यार्थियों (छात्रों) की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक–4.2.3

नियंत्रित व प्राथमिक समूह के विद्यार्थियों के अंतिम परीक्षण के प्राप्तांको का माध्य, प्रमाण विचलन, क्रान्तिक अनुपात, दर्शन सारणी।

	विद्यार्थी संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	क्रांतिक अनुपात
नियंत्रित समूह	20	18.25	2.41	4.08
प्रायोगिक समूह	20	21.25	2.09	

❖ 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

निरीक्षण :–

अंतिम परीक्षण के अंक मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि नियंत्रित समूह का मध्यमान 18.25 है, तथा प्रायोगिक समूह का मध्यमान 21.25 है। 'टी' मूल्य 4.08 है, तथा यह 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः नियंत्रित समूह के कक्षा अध्यापन की पद्धति से प्रायोगिक समूह की संगणक सहायक शिक्षण से विद्यार्थियों की

निष्पत्ति अच्छी दिखाई दी इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

स्पष्टीकरणः–

परम्परागत अध्यापन पद्धति विद्यार्थियों को अरूचिपूर्ण लगती है। उसमें विद्यार्थियों की सहभागीता अधिक नहीं होती है। संगणक सहायक शिक्षण से विद्यार्थी स्वयं कार्य करते है। स्वअध्ययन करते है। परिणाम स्वरूप उसमें विद्यार्थियों की जिज्ञासा बनी रहती है। इसलिए उसके प्राप्तांक पर परिणाम दिखाई देता है।

निष्कर्ष :–

कम्प्यूटर सहायक शिक्षण से विद्यार्थियों (छात्रों) की निष्पत्ति में सार्थक अंतर है।